02-09-07 - दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश – (मोहिनी बहन)

आप सबका याद-प्यार लेकर जब बाबा के पास वतन में पहुँची तो देखा कि आज वतन में न दादी जी दिखाई दे रही हैं, न बाबा दिखाई दे रहा है। तो मन में संकल्प आया कि बाबा को तो पता है कि इस समय भोग लेकर आते हैं, तो मैं इधर-उधर देखने लगी, कहीं दिखाई नहीं दिए तो मैं बाहर की तरफ चली तो बाहर कुछ दूर पर मैंने देखा कि बहुत सुन्दर बगीचा था। तो मैंने सोचा कि बाबा बगीचे में न हो। तो मैं बगीचे के अन्दर चलती रही। एक जगह देखा बहुत रंगबिरंगे फूल थे। वहाँ पर बाबा और दादी खड़े हुए थे। बाबा कुछ फूल देखता था, तोड़ता था और दादी के हाथ में पत्तियों का बहुत बड़ा थाल जैसा था जिसमें बाबा फूल रखता जाता था। तो मैं भी धीरे-धीरे करके बाबा के पास पहुँची और मैंने यह दृश्य देखा। जब दादी की दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी तो दादी मुस्कराई और कहा आपको भी फूल बहुत पसन्द है ना! मैंने हाँ करके गर्दन हिला दी। फिर बाबा फूलों को दृष्टि देता रहा और दादी से पूछा कि बच्ची यह कौन-कौन सा फूल है, तुम जानती हो इनकी विशेषता क्या है? तो दादी ने कहा बाबा मैं 5-6 फूलों को ही अच्छी तरह जानती हूँ। तो बाबा ने मुस्कराया कहा अच्छी बच्ची इनकी विशेषता बताओ। तो दादी ने कहा कि बाबा यह गुलाब का फूल है, यह मोतिए का फूल है, यह चम्पा का फूल है, यह कमल का फूल है... ऐसे मेरे से भी पूछा तो मैंने भी कुछेक के नाम बताये, फिर हम दोनों बाबा के तरफ देखने लगे। तो बाबा ने कहा कि देखो बच्ची हर फूल की अपनी विशेषता है। फिर एक दूसरी थाली सामने रखी थी बाबा ने कहा इसके रूमाल को हटाओ। तो देखा उसमें भी बहुत सुन्दर-सुन्दर गुलाब के फूल रखे हुए थे। लेकिन वो गुलाब के फूल कोई कपड़े के, कोई कागज के, कोई मोम के थे। ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार के फूल थे। थे सब गुलाब के, उसमें चमक भी बहुत अच्छी थी। रंग भी अच्छे थे, बने भी बहुत अच्छे थे। किसी-किसी में ऊपर से खुशबू भी डाली हुई थी। तो बाबा ने कहा कि दोनों प्रकार के फूल देखे। मैंने कहा जी बाबा। यह चैतन्य है, यह जड़ हैं। लेकिन जड़ भी ऐसे थे जैसे रीयल हों। तो बाबा ने कहा हर फूल की अपनी विशेषता है। यह देखो मोतिया बहुत छोटा है लेकिन इसमें खुशबू कितनी है। यह चमेली का फूल कितना नाज़ुक है, रखो तो खुशबू फैल जायेगी। यह चम्पा का फूल है, इसमें रंग भी है, रूप भी है, सुगन्ध भी है। कमल का फूल भी देखने में बहुत बड़ा, अच्छा दिखाई दे रहा था, लेकिन बिना सुगन्ध के था।

फिर बाबा ने कहा कि बच्ची बताओ इसमें सबसे अच्छा फूल कौन-सा है? तो मैं तो देखती रही, तो दादी ने कहा कि बाबा सबसे अच्छे दो फूल हैं। एक है चम्पा, दूसरा है गुलाब। फिर कहा दोनों की विशेषतायें सुनाओ। तो दादी ने और हमने दोनों की विशेषतायें सुनाई। फिर बाबा ने एक गुलाब का फूल उठाया और उठाकर उसे घुमाने लगा। घुमाते, घुमाते फूल की पत्तियाँ जो हैं वह झड़ती जाती थी। अन्त में सब पत्तियाँ झड़ गई और बीच वाला बीज जो है वह

रह गया। दूसरे फूल हिलाने से झड़े नहीं। तो बाबा ने कहा कि देखो इस फूल की कोई भी पत्ती आपस में चिपकी नहीं रहती है, अपने आप भी झड़ जाता है। तो इसकी विशेषता है कि न पुराने संस्कार, न पुराने सम्बन्ध, न पुराना स्वभाव कुछ भी नहीं रहता है, सब खत्म हो जाता है। केवल बीज ही रह जाता है क्योंकि आत्मा अमर है। बाकी यह देह भी नाश्वान है, देह के संस्कार भी परिवर्तन होते हैं, देह का स्वभाव भी परिवर्तन होता है... तो आपके दादी का गुलाब के फूलों से श्रृंगार हुआ क्योंकि दादी की विशेषता यही रही कि दादी अपनी जीवन में सबकी प्यारी भी रही और सबसे न्यारी भी रही। न उसको अपनी देह से लगाव था, न देह के सम्बन्ध से, न पदार्थ से, न किसी पुराने संस्कारों से लगाव था। सब प्रकार से न्यारी, प्यारी थी। जैसे-जैसे कर्मातीत अवस्था के नजदीक आती गई यह सब सम्बन्ध खत्म होते गये, बस आप और बाप, यही स्मृति दादी की अन्त तक रही। और दादी का मुरली से भी प्यार, सेवा से भी प्यार और बाप से भी प्यार था। जब सेवा के समय कोई आता था तो दादी अपने आप आंख खोल देती थी, उस समय उसका पार्ट था नज़र से निहाल करने का, किसी को प्रेम की दृष्टि, किसी को शक्ति की दृष्टि दी, जो-जो इच्छा रखता था दादी के नयनों की दृष्टि से वह अपनी इच्छा पूरी करता था। फिर दादी उपराम हो जाती थी। दादी ने अन्त तक अपना सेवा का पार्ट बजाया और मुरली अन्त तक सुनती रही। तो दादी को सिवाए बाबा के और कोई भी याद नहीं था। एकदम प्यारी और उपराम रही, यह स्थिति आप सब बच्चों ने उनसे अनुभव की होगी। तो मैंने कहा बाबा इतनी अच्छी स्थिति थी तो आपने बुला क्यों लिया? दादी अच्छी थी, दिन प्रतिदिन अच्छी होती जा रही थी। तो बाबा ने कहा देखो बच्ची, आज मैं आपको एक राज़ बताता हूँ। मैंने आपकी दादी को बुलाया नहीं। जब यह मेरे पास आई भी तो मैंने इसको कहा कि जाओ बच्ची अभी तुम्हारी जरूरत है, सब आपको याद कर रहे हैं, जाओ। मैंने भेजा भी बच्ची को, बच्ची आई भी लेकिन जब बच्ची ने अपने पुराने तन को देखा तो देखते ही वो वापस आ गई और कहा बाबा यह तन मेरे लायक नहीं है। इस तन में कुछ है नहीं क्योंकि सारा शरीर अभी बेकार हो गया है। बोला, आप तो सर्वशक्तिवान की बच्ची हो, प्रकृति जीत हो, आप तो चला सकती हो ना। तो बोला नहीं बाबा, मैंने बहुत चलाया है और मैं समझती हूँ कि मेरी सेवा इस शरीर के द्वारा पूरी हो गई है। अब मैं नहीं जाऊंगी। तो दादी आई, दादी ने शरीर देखा, चारों तरफ देखा और विदाई ले ली। बोला मैंने भेजा पर दादी खुद नहीं चाहती थी तो बाबा क्या करता। बाबा मुरब्बी बच्चे को, समान बच्चे को आज्ञा नहीं दे सकता है। मैंने बच्ची के सामने तो केवल अपना विचार रखा, लेकिन बच्ची ने फाइनल कर दिया तो बाबा कुछ नहीं कर सकता है। लेकिन बच्ची ने जो सेवा की, बाप तो गुप्त रहा, पब्लिक के सामने नहीं आया लेकिन बच्ची ने तो देश और विदेश में जा-जा कर, चक्कर लगाकर बाप का नाम बाला किया और स्वयं का नाम भी बाला किया। आज बाबा देख रहा है कि देश विदेश चारों तरफ बच्ची के गुण, बच्ची की सूरत, सीरत, बच्ची के चरित्र कोई न कोई एक गुण, कोई न कोई एक शक्ति जिससे भी वह मिली है उसके पास में

वह सौगात, वह अमानत के रूप में सुरक्षित है। बच्ची के याद की खुशबू, उसके ज्ञान की खुशबू, शान्ति की, प्यार की, न्यारेपन की खुशबू चारों तरफ फैल रही है। काई भी इस आत्मा को भुला नहीं सकता है। तो बाबा ने नहीं बुलाया लेकिन बच्ची खुद आई। इसलिए आप सब बच्चे ड्रामा की भावी समझ जो दादी ने कहा, जो दादी ने करके सिखाया, दिखाया, उस कदम के पिछाड़ी कदम रखते अपने आपको भी सम्पन्न, कर्मातीत बनाओ और जो बाबा और दादी का कार्य रहा हुआ है उसको भी जल्दी-जल्दी सम्पन्न करो क्योंकि अभी तो स्थापना के लिए नया फोर्स, डबल फोर्स हो गया है ना, वह कार्य करेगा। इसलिए बच्चों को कहना कि अभी एलर्ट रहकर आलराऊण्ड सेवा में रहते अपना भी, अन्य आत्माओं का भी भाग्य बनाओ।

ऐसे कहते बाबा ने दादी को बहुत प्यार से यज्ञ का ब्रह्माभोजन खिलाया तो दादी ने कहा क्या रोज़-रोज़ नई-नई चीज़ें बनाकर लाती हो। मैंने कहा दादी आप जो-जो खाते थे वह सब हम आपको वतन में खिलायेंगे। तो दादी ने कहा मैं तो सब खाती थी। तो मैंने कहा कुछ दिन बीमारी के कारण नहीं खाती थी ना, अभी तो हम आपको सब खिलायेंगे। फिर दादी मुस्कराई, बाबा ने दादी को खिलाया, फिर दादी ने मुझे अपने हाथों से खिलाया और कहा कि आप दादी के अंग संग रही हो, बचपन से लेकर अब तक जितनी पालना आपने ली है, अब उस पालना का रिटर्न आपको देना है और कहा कि मुन्नी को भी बहुत-बहुत याद-प्यार देना और कहना कि मुन्नी दादी के आगे थी, अभी मुन्नी, मुन्नी नहीं रही है लेकिन मुन्नी को बड़ा बनना है, लक्ष्मी बनना है। जो उसका नाम है, लक्ष्मी, ऐसे लक्ष्मी स्वरूप में रहकर दादी ने जो इतना बड़ा बेहद का यज्ञ सौंपा है, उस बेहद के यज्ञ से जैसे दादी के सामने पालना करती आई, ऐसे निमित्त बनके सबको सन्तुष्ट करना, यह दादी की आज्ञा सदा मानी है और अब भी यह दादी की आज्ञा है, उस आज्ञा पर तो आपको चलना ही है। यही आपके प्यार के निशानी है कि दादी के प्यार में जो दादी ने सिखाया, जो दादी ने जवाबदारी दी, उस जवाबदारी को अच्छी तरह से निभाना है। दादी जानती है कि दादी कॉटेज वाले चाहे भाई हैं, चाहे डॉक्टर हैं, चाहे बहनें हैं, चाहे माइयाँ हैं, सब बहुत याद करते हैं, क्योंकि इतना साल दादी इनके साथ में रही है। चाहे पाण्डव भवन हो, चाहे ज्ञान सरोवर हो, चाहे शान्तिवन हो, तो सबको दादी का विशेष याद-प्यार देना और कहना कि दादी सदा आपके साथ है, बाबा रोज़ मुझे तीनों स्थानों का, सभी स्थानों का चक्कर लगवाता रहता है, मैं आपसे अलग नहीं हूँ सदा आपके साथ हूँ और सदा आपके साथ रहूँगी। ऐसे कहते बहुत प्यार से दादी ने मुझे यहाँ भेज दिया। ओम् शान्ति।

3-9-07 दादी जी के प्रति भोग तथा वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश
(कैलाश बहन-गांधीनगर)

आज आप सभी भाई-बहिनों की याद ले करके बाबा के पास वतन में पहुँची, तो वतन में बाबा, दादी और बड़ी दीदी बाबा के दोनों हाथ पकड़ करके सामने से आ रहे थे। मैं तीनों को देखती रही तो बाबा ने बोला बच्ची, क्या देख रही हो? मैंने कहा बाबा आज दादी और दीदी दोनों आपके साथ हैं, आप सबके लिए मैं भोग लेकर आई हूँ। तो बाबा ने बोला बहुत अच्छा बच्ची, और क्या लाई हो? मैंने कहा बाबा सभी ने दादी जी को बहुत-बहुत याद दी है। तो मैं जब सबकी याद दे रही थी तो सभी भाई-बहिनें वतन में इमर्ज हो गये और कई ग्रुप में अलग-अलग इक्ट्ठे हो गये। मैंने कहा बाबा इनको अलग-अलग ग्रुप में क्यों रखा है? तो बाबा मुस्कराने लगे और बोला बच्ची, अलग-अलग नहीं हैं, सब बच्चे एक जैसे हैं लेकिन सबकी सेवा अलग-अलग है। एडवांस पार्टी की भी अपनी सेवा है। यह भी बहुत बड़ी सेवा के निमित्त हैं। फिर मैंने दादी को बोला, दादी आज आप कहाँ-कहाँ गये थे। तो दादी ने कहा आज मैं दीदी और बाबा को ले करके गयी थी। तो मैंने कहा दादी आप बाबा को लेकर गई थी, या बाबा आपको लेकर गये थे? तो दादी ने बोला मैं लेकर गयी थी। आज मैंने बाबा को बाबा का बेहद घर दिखाया कि बाबा देखो कितने सारे स्थान हैं, कितने डिपार्टमेंट हैं और उसमें कितने भाई बहिनें सेवा कर रहे हैं। तो आज बाबा, दादी और दीदी सब बच्चों के सिर पर हाथ घुमा रहे थे, दृष्टि से शक्ति भर रहे थे, और हिम्मत दे रहे थे कि बच्चों को हिम्मत से चलना है। फिर मैंने कहा दादी आज आपके लिए मधुबन से भोग लेकर आई हूँ। सभी ने आपको बहुत-बहुत याद दी है। तो दादी ने भोग खोला और कहा आज बहुत प्यार से सभी ने भोग बनाया है। आज मैं बाबा को यही बता रही थी कि हरेक कितना हिम्मत से, कितना शक्ति से, कितना स्नेह प्यार से अपने अपने कार्यों को सम्भाल रहे हैं इसलिए बाबा हिम्मत का हाथ घुमा रहे थे। फिर बाबा ने दीदी को और दादी को बहुत स्नेह से भोग स्वीकार करवाया। बाबा ने खुद भी बहुत प्यार से भोग स्वीकार किया और बोला कि बच्ची और कुछ कहा है किसी ने? हमने कहा नहीं बाबा, किसी ने कुछ कहा नहीं है। सिर्फ दादी को सब बहुत याद करते हैं, दादी बहुत याद आती है। ऐसे लगता है जैसे दादी यहाँ ही कहीं घूम रही है। तो बोला हाँ बच्ची, जो बोल रही हो ना वो ठीक है। दादी सब जगह चक्कर लगा रही है, सबके पास जा रही है। फिर मैंने कहा बाबा कल रात्रि को दादी जानकी जी कह रहे थे, कि एक बहन ने दादी से पूछा कि बाबा ने सन्देश में कहा कि दादी जब वतन में आई तो दादी का पांचों तत्वों ने स्वागत किया। तो वह स्वागत कैसे किया? तो बाबा आप बतायें कि कैसे सभी तत्वों ने दादी का स्वागत किया? तो बाबा मुस्कराने लगे और दादी को कहा कि आप इस बच्ची को बताओ कि पाँचों ही तत्वों ने कैसे स्वागत किया? तो दादी ने कहा बाबा आप ही बताओ। तो बाबा ने बोला देखो, बाबा तो बच्ची के पास हमेशा साथ साथ था, बच्ची को देखता भी था, बहुत अच्छी तरह से शक्ति भी भरता था। बच्ची के अन्दर यह संकल्प था कि मुझे यहाँ ही रह करके सेवायें करनी हैं, दूसरा जन्म नहीं लेना है, इसी ही जन्म से सेवा करनी है, लेकिन दूसरी ओर बच्ची को ऐसा भी लग रहा था कि अभी बाबा के पास जाने का समय आ गया है। अभी बाबा के पास रह करके सेवा करनी है। ऐसे ऐसे बच्ची सोचती थी तो जब बच्ची बाबा के पास वतन में आई तो बाबा ने कहा बच्ची तुम उस शरीर में भी

रह सकती हो, तुम्हारी इच्छा हो तो तुम अपने शरीर में वापस जा सकती है। तो दादी ने पीछे मुड करके अपने शरीर को देखा तो इसे लगा कि इस शरीर से तो मैं कभी भी सेवा नहीं कर सकूंगी। अभी बाबा को तो बहुत जल्दी-जल्दी सेवा करानी है, यह शरीर तो ऐसी सेवा नहीं कर सकेगा, तो बाबा को ही दादी ने बोला बाबा, अब तो मैं आपके साथ सेवा करूँगी। तो बाबा ने सेकण्ड में बच्ची को अपने पास बुला लिया। फिर मैंने पूछा बाबा पाँच तत्वों ने कैसे दादी का स्वागत किया? तो बाबा मुस्कराते हुए बोले, जब बच्ची आयी तो पाँचों ही तत्व अपने फुल फोर्स के रूप में थे, बच्ची तेरे को पता है उस दिन बहुत गर्मी थी, हमने कहा हाँ बाबा, गर्मी तो थी, बहुत धूप थी और हम तो धूप में ही बैठे थे। तो बाबा ने बोला कि हर एक जो तत्व था वो अपने असली रूप में था और बच्ची जैसे जल, वायु, आकाश, पृथ्वी यह सब बहुत खुशी में थे। दादी को जहाँ भी कहीं घुमा रहे थे, रखा था, ले जा रहे थे, रख रहे थे, तो यह पृथ्वी भी बड़ी खुश थी और जब दादी की अन्तिम क्रिया की तभी भी इतना प्रकृति खुश थी कि मैं कितनी भाग्य-शाली हूँ जो यह इतनी महान हस्ती की क्रिया मेरे ऊपर हो रही है। और अन्तिम क्रिया के लिए मेरा सहयोग लिया जा रहा है, तो प्रकृति भी बड़ी खुश थी। जैसे हवा थी वो भी बहुत खुश थी। हवा ने जैसे एकदम दादी को उड़ा करके बाबा के पास पहुँचा दिया और जो बरसात थी वो भी जैसे गुलाब जल छिकटते हैं, ऐसे दादी की अस्थियों को जब उठा रहे थे तो ऊपर से धीरे-धीरे बरसात हो रही थी। और बच्ची की जब अन्तिम क्रिया की तो जो अग्नि थी वो भी अपने असली रूप में दादी को सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करवाने के लिए पूरा सहयोग दे रही थी और आकाश भी बड़ा खुश हो करके दादी का स्वागत कर रहा था। एडवांस पार्टी वाली आत्मायें भी बहुत प्यार से स्वागत कर रही थी, और बाबा की गोद में बच्ची इतना स्नेह से समा गयी जैसे छोटा बच्चा माँ बाप की गोद में सो जाता है और समा जाता है, इसी रूप में दादी बाबा के पास पहुँच गयी। तो एक-एक तत्व जो था वो बहुत खुशियों में था, बहुत झूम रहा था और बहुत प्यार से एक-एक तत्व दादी का स्वागत कर रहा था।

फिर बाबा ने कहा बच्ची सभी बच्चों को जो भी जहाँ भी सेवा कर रहे हैं और जहाँ जहाँ भी बच्चों को सेवा के लिए रखा हुआ है, चाहे शान्तिवन है, ज्ञान सरोवर है, मधुबन है, म्युजियम है, हॉस्पिटल है, बहुत सारे डिपार्टमेन्ट हैं, सब स्थानों के सेवाधारियों को दादी की बहुत-बहुत याद देना। आज तो दादी दीदी ने, बाबा ने अपने हाथों से बहुत प्यार से स्नेह से सबके सिर पर हाथ घुमाया है और दादी बहुत खुश हो रही है। फिर दादी ने बोला कि अभी तो मैं पूरे विश्व की आत्माओं के पास जा करके स्नेह शक्ति दे रही हूँ और जो बाबा ने हमें इतना कार्य दिया है, वो अभी बहुत जल्दी-जल्दी पूरा करना है। पहले तो शरीर फिर भी बाधा रूप था, जितना मैं चाहती थी उतना नहीं कर सकती थी, एक ही स्थान पर थी लेकिन अब मैं अनेक स्थानों पर जा करके सूक्ष्म शरीर से एक सेकण्ड में दूर-दूर तक सेवा कर सकती हूँ। मुझे बाबा के पास बहुत अच्छा लगता है। बाबा ने जो हमें शक्तियां दी हैं, उन्हें वतन में आ करके और भी अच्छी तरह से जानने को मिला और बहुत अच्छी तरह से बाबा सभी स्थानों पर सेवा करा रहा है। एडवांस पार्टी वाले भी सभी दादी को मिल रहे हैं और अपनी-अपनी सेवायें बता रहे हैं। और और भी प्रोग्राम बता रहे हैं कि कैसे कैसे अभी सेवायें करनी हैं। तो बस, वतन में वही सब कुछ चल रहा है। ऐसे बाबा ने दीदी ने, दादी ने सभी दादियों को भाई-बहिनों को बहुत-बहुत यादप्यार देते हुए हमें वतन से छुट्टी दी। ओम् शान्ति।

04-09-07 दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश
(रुकमणी बहन)

आज जब बाबा के पास वतन में भोग लेकर पहुँची तो सामने बाबा और दादी को देखा। बाबा ने हमसे पूछा बच्ची आपके वतन का क्या समाचार है? सभी ठीकठाक है? तो हमने बाबा को सुनाया कि बाबा दादी जी के निमित्त कल माऊण्ट आबू में प्रोग्राम रखे गये थे, फिर कल शान्तिवन में भी प्रोग्राम है। मैं यह सुना ही रही थी तो बाबा ने कहा बच्ची और क्या समाचार है? तो हमने कहा बाबा और तो हमको मालूम नहीं है, वह तो आप ही सुनायेंगे। तो बाबा ने दादी का एक बहुत सुन्दर, बहुत बड़ा विशाल रूप दिखाया। उसमें देखा दादी को जैसे अनेक भुजायें हो गई और उन भुजाओं में से अनेक प्रकार की शक्तियाँ निकल रही हैं वह रूप और बड़ा-बड़ा होता गया। दादी की जो भुजायें थी उसके नीचे अनेक भाई बहिनें, बच्चे आते जा रहे हैं, वह बहुत बड़े स्थान पर जैसे अनेक भाई बहिनें दादी जी की भुजाओं के नीचे थे और दादी हाथ घुमा कर जैसे सबको वरदान दे रही थी। फिर देखा दादी एक बहुत बड़े ग्लोब पर खड़ी हो गई और देख रही है कि बाबा के इतने ढेर सारे बच्चे आते जा रहे हैं। बाबा और दादी इतने ढेर बच्चों को देख बहुत-बहुत खुश हो रहे थे। दादी के वरदानी हाथ से उन सभी को कुछ न कुछ सकाश, वरदान मिल रहा था। तो बाबा मेरे से पूछते हैं बच्ची क्या देख रही हो? तो मैंने कहा बाबा दादी को इतनी भुजायें हैं, और सभी भुजाओं से हर एक को कुछ न कुछ मिल रहा है। तो बाबा ने कहा कि देखो बच्ची वर्तमान समय मनुष्य भगवान की तो पूजा करते है, परन्तु दुनिया में सबसे जास्ती देवियों की पूजा होती है, उसमें भी विशेष माँ का पाठ देवी के रूप में करते हैं। माँ के आगे भक्त कोई न कोई मनोकामनायें ले करके जाते हैं और माँ-माँ कह करके पुकारते हैं, तो भक्तों की वह आशायें पूरी होती हैं। तो दादी पहले हद में थी, साकार में थी। अभी बाबा ने विश्व के गोले पर दादी को बिठाया है। इसलिए दादी अब हद की नहीं रही, अभी विश्व की है। जो इतनी आने वाली आत्मायें है, भगत आत्मायें है, उनको समय अनुसार बाबा से तो वरदान मिलता ही है लेकिन अभी दादी को वतन में बुलाया है, तो इतनी आत्मायें जो रही हुई हैं उनको दादी के द्वारा अनेक वरदान, अनेक शक्तियाँ और सकाश मिलने वाली है। फिर बाबा ने कहा देखो बच्ची साकार में तो कई लोग जानते थे, कई नहीं जानते थे, ब्रह्माकुमारियों को भी नहीं जानते थे, दादी क्या है, यह भी नहीं जानते थे। पर दादी जब गई तो टी.वी. द्वारा साइंस के साधनों द्वारा कितनी आत्माओं की सेवा हुई, अज्ञानी आत्माओं ने भी दादी को देखा। वैसे शिवबाबा को तो कोई देख नहीं सकता लेकिन दादी का रूप देख करके भी लोगों को यही लगता है कि वास्तव में ब्रह्माकुमारी संस्था कुछ है। तो दादी अभी बाबा के पास वतन में बैठी है, तो बाबा बच्ची के बहुत बड़े रूप से ऐसा ऊंचा कार्य करायेगा जो अभी तक नहीं हुआ है। तो दादी बाबा की यह रूहरिहान सुनकर बहुत मुस्करा रही थीं। फिर दादी का वह बड़ा-बड़ा रूप

धीरे-धीरे मर्ज होता गया। फिर दादी को सामान्य रूप में देखकर मैंने बाबा को बोला बाबा आज मैं आपके लिए और दादी जी के लिए भोग लेकर आई हूँ। मैंने दादी और बाबा के आगे भोग रखा। तो बाबा ने भी बड़े प्यार से भोग स्वीकार किया और दादी को भी स्वीकार कराया। फिर हमने आप सभी की, खास सभी दादियों की, मुन्नी बहन, मोहिनी बहन, ईशू दादी की बहुत-बहुत भी याद दी। फिर हमने कहा बाबा दादी जी बिगर तो सारा कॉटेज तो क्या, पूरा शान्तिवन खाली-खाली सूना लगता है। तो दादी जी कहने लगी - जैसे कहते हो बाबा सदा साथ रहता है, ऐसे ही समझो दादी भी सदा साथ है। दादी आप सभी से दूर नहीं सदैव साथ है। फिर मैने मुन्नी बहन की विशेष याद दी। दादी जी कहने लगी कि मुन्नी सदैव दादी जी के अंग-संग रही, सेवा करती थी। अभी भी बाबा और दादी को साथ रखकर सेवा करती रहेगी। बिजी रहेगी। तो बाबा और दादी की दुआयें मिलती रहेंगी और दादी के साथ का भी अनुभव करती रहेगी। बाकी दादी तो आप सभी के साथ है ही। फिर मोहिनी बहन की याद दी तो दादी कहने लगी - मोहिनी तो फिर भी वतन में दादी से मिलकर जाती है। वह भी दादी जी के अंग संग रही है। जो दादी से सीखा है अब वही दादी के साथ की सभी को फीलिंग और अनुभव औरों को कराना है। फिर ईशु दादी की भी याद दी तो दादी कहने लगी - ईशू तो बाबा की दादी की याद में समाई हुई है क्योंकि बाबा की पालना और संग का अनुभव किया। इतने साल दादी के भी साथ रही तो अनुभव बहुत किये। अभी वही अनुभव औरों को कराने हैं। ऐसे कहते दादी जी ने सभी दादियों को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया और मेरे को पूछा परदादी ठीक है? मैंने कहा ठीक है। मैंने कहा दादी जी आपकी और परदादी की व्हील चेयर एक साथ चलती थी, वह सीन बहुत याद आता है। दादी ने कहा हम सब दादियाँ सदैव साथ हैं, चले नहीं गये। सभी वतन (परमधाम) साथ जायेंगे। फिर दादी ने सभी पाण्डव भवन, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल, म्यूजियम, सभी स्थानों के भाई-बहनों को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया। भोग स्वीकार कराकर मैं नीचे वतन में आ गई।

5-9-07 दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (शशी बहन)

आज आप सबकी बहुत ही स्नेह भरी याद लेते जैसे ही मैं वतन में पहुंची तो जिस प्रकार सन राइज़ का दृश्य होता है, वैसा दृश्य दूर से देख रही थी तो बहुत सुन्दर-सुन्दर किरणों से सुनहरा प्रकाश फैल रहा था। यह दृश्य देखते संकल्प किया कि बाबा और दादी कहाँ हैं! तो संकल्प करते ही सामने से दादी जी बाबा का हाथ पकड़कर आते दिखाई दी, जब सामने आये तो देखा सनराइज़ की किरणें दादी पर पड़ रही हैं, बाबा और दादी का बहुत सुन्दर रूप दिखाई दे रहा था। मैंने कहा बाबा यह दृश्य आज बहुत सुन्दर लग रहा है। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि बाबा आज यह दृश्य क्यों दिखा रहे हैं? दादी ने विश्व के कोने कोने तक ज्ञान का ऐसा प्रकाश फैलाया है, जो 24 ही घण्टा जैसे बाबा के ज्ञान की ज्योति जग रही है। ऐसे बाबा से बात ही कर रहे थे तो देखा बाबा के हाथ में सूर्यमुखी फूल हैं, जिसे बाबा और दादी देख रहे हैं, मैं भी देखने लगी तो देखा जैसे उस पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो उन फूलों की पत्तियां निकलकर दादी के ऊपर ऐसे पड़ रही थी जो दादी का बहुत सुन्दर श्रृंगार हो रहा था। कोई पत्तियां मुकुट के रुप में सज जाती, कोई माला के रूप में। यह श्रृंगार बहुत सुन्दर और प्यारा लग रहा था। बाबा भी मुस्कराते रहे और मैं भी बहुत खुश हो रही थी कि दादी कितनी अच्छी लग रही है। तो मैंने कहा बाबा आज तो दादी विश्व महाराजन के रूप में सजी हुई दिखाई दे रही है। तो बाबा ने कहा कि इस बच्ची ने हर आत्मा का कदम कदम पर श्रृंगार किया है, कई आत्मायें दादी के सामने आते ही बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव करती थी, कईयों ने दादी को देखकर अपने जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन लाया। दादी का जीवन सबके सामने एक्जैम्पुल था। आज हर बच्चा अपने दिल के उद्‌गार दादी के सामने प्रकट कर रहा है। उसी से दादी का श्रृंगार हो रहा है। तो दादी ने कहा इतना सब क्यों कर रहे हैं? तो बाबा ने कहा बच्ची तुमने जो किया उसका यह बच्चे रिटर्न दे रहे हैं। तो दादी ने कहा मैंने तो कुछ भी नहीं किया है, मेरे सेवा साथियों ने बहुत कुछ किया है, उन्हें यह रिटर्न मिलना चाहिए। तो बाबा ने कहा तुम निमित्त बनी इन सबसे कराने के, तो हर एक आपका श्रृंगार कर रहे हैं। तो दादी कहे नहीं बाबा यह तो आपने किया है, बाबा के बच्चों ने किया है, साथियों ने किया है। तो दादी ने सभी सेवासाथियों को याद किया। जैसे दादी ने याद किया तो एक तरफ सभी मुख्य दादियां मुख्य भाई और एडवांस पार्टी वाले सब दादी के सामने आ गये और दादी को घेरकर खड़े हो गये और सभी कहने लगे हमारी दादी, हमारी दादी। तो दादी कहती है यह सब मेरे सेवा के साथी हैं, इन्होंने हर कार्य में मदद किया है। तो इतने में देखा सभी का रूप परिवर्तन होने लगा और सभी पर लाइट पड़ी तो हर एक विश्व महाराजन के रूप में दिखाई देने लगा।

फिर यह दृश्य पूरा हुआ तो दादी ने कहा आज उन सभी को विशेष याद कर रही थी जो बहुत समीप सेवा के साथी रहे हैं, उनकी खूशबू और स्नेह दादी के पास पहुंच रहा है। जब मैं साकार में थी और संकल्प करती थी तो सब सामने आ जाते थे, सभी ने सदा हाँ जी करके संगठित रूप

में कार्य किया है, तो अभी भी अपने संगठन को और मजबूत करते हुए स्नेह के सूत्र में बंधकर बाबा और दादी को सामने रखकर हाँ जी का पाठ पक्का करते जायेंगे तो यह कार्य सहज सम्पन्न होता जायेगा और विश्व में बाबा का सन्देश जल्दी-जल्दी पहुंच जायेगा। अब कोई भी ऐसा न रहे जो कहे मुझे बाबा का सन्देश नहीं मिला है।

फिर मैंने कहा दादी आपके लिए भोग लेकर आये हैं तो दादी मुस्कराती रही, फिर दादी ने बाबा को भोग खिलाया और बाबा ने दादी को खिलाया। फिर बाबा ने दादी को कहा अपने सर्व साथियों को इमर्ज करो तो सभी दादियां मुख्य भाई बहिनें, मुन्नी बहन, मोहनी बहन भी इमर्ज हुई, तो दादी अपने हाथ से सबको भोग खिलाने लगी। तो मुन्नी बहन कहे मैं पहले खिलाऊंगी। तो दादी ने कहा तुम तो सदा खिलाती रही हो, आज दादी खिलायेगी। तो मुन्नी बहन ने कहा मैं तो आज दादी को जी भर करके खिलाऊंगी। फिर दादी ने सबको भोग खिलाया और जैसे सबको संकल्प से याद किया तो बहुत सारे भाई बहिनें इमर्ज हो गये और सब बाबा के सामने जैसे स्नेह में खोये हुए थे तो बाबा ने कहा देखो दादी तुम्हारी रचना कितनी स्नेही सुन्दर है। तो दादी ने कहा बाबा यह तो आपकी रचना है। तो बाबा ने कहा सचमुच हर ब्राह्मण आत्मा के दिल में जो बाबा के प्रति दादियों के प्रति स्नेह है, इस स्नेह में सदा रहें तो बाबा और दादी समय प्रति समय बहुत अच्छा अनुभव कराते रहेंगे। इससे सदा निर्विघ्न बनते जायेंगे, उड़ते और उड़ाते रहेंगे। दादी ने विशेष तीन बातें कही 1- एक तो कहा बाबा से सच्चा स्नेह रखना 2- बड़ों को रिस्पेक्ट देना, 3- ब्राह्मणों के संगठन को मजबूत रखते हुए बाबा के कार्य में तत्पर रहना तो बहुत जल्दी विश्व में बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

फिर मैंने कहा दादी आपको सब बहुत याद करते हैं? तो दादी ने कहा सबकी याद मेरे पास पहुंचती है। अभी इस याद को स्वरूप में लाते हुए दूसरों को भी यही अनुभव कराना है। फिर तो मैं बाबा और दादी से दृष्टि लेते हुए वापस आ गई। ओम् शान्ति।